(क) का वाग्मिता अस्ति?
उ० मितं च सारं च वचो हि वाग्मिता।

(ख) कं मनुष्याणां शरीरस्थो रिपुः कथ्यते?

उ० आलस्यं मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः।

(ग) कुटिलेषु नीतिः किं न अस्ति?

उ० कुटिलेषु नीतिः आर्जवम् न अस्ति।

(घ) कया सर्वं सिध्यति?

उ० क्षमया सर्वं सिध्यति।

प्र०2. विभक्ति, वचन निर्देश कीजिए।

उ०	शब्द	विभक्ति	वचन
(क)	उपायेन	तृतीया	एकवचन
(ख)	व्यसनेषु	सप्तमी	बहुवचन
(ग)	क्षमया	तृतीया	एकवचन
(घ)	पर्वताः	प्रथमा	बहुवचन
(ङ)	कुटिलेषु	सप्तमी	बहुवचन

प्र०3. नीचे लिखे शब्दों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

उ०	शब्द	वाक्य प्रयोग
(क)	धनम्	(क) विद्याधनम् सर्वश्रेष्ठ धनम् अस्ति।
(ख)	आर्जवम्	(ख) दुष्टान् प्रति आर्जवम् उचितम् नास्ति।
(ग)	रिपुः	(ग) आलस्यं महान् रिपुः अस्ति।
(घ)	गृहे	(घ) उद्यमीपुरुषस्य गृहे लक्ष्मीः सदा निवसति।
(ङ)	लक्ष्मीः	(ङ) लक्ष्मीः चञ्चला अस्ति।

प्र०4. निम्नलिखित सूक्तियों की व्याख्या कीजिए।

उ० (क) व्यसनेषु मा मतिः।

व्याख्या– व्यसन के शाब्दिक अर्थ हैं हानि, विनाश, पराजय, पतन, दोष, इत्यादि। परन्तु प्रायः इसका प्रयोग व्यसन अर्थात् दुर्व्यसन यानी बुरी आदतों के लिए होता है। तभी कहा गया है कि अपनी बुद्धि बुरी आदतों में मत लगाओ। अपनी बुद्धि विद्या पढ़ने में, अच्छे कार्य करने में, बड़ों की आज्ञा मानने में तथा दूसरों की भलाई करने आदि में लगाइए। कहा भी गया है–

बुरे काम का बुरा नतीजा, न मानो तो कर के देखो।
भले काम का भला नतीजा, न मानो तो कर के देखो।।

(ख) क्षमया किं न सिध्यति।

Scanned with CamScanner

सुधर जाता है। अन्यथा लड़ाई–झगड़े का कोई अन्त नहीं होता। वह आगे शत्रुता के रूप में होकर बढ़ती ही रहती है। इसलिए क्षमा करना महानता का लक्षण है।

(ग) आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः।

व्याख्या– आलस्य मनुष्य के शरीर में विद्यमान बहुत बड़ा शत्रु है। आलसी व्यक्ति जीवन में कभी भी सफलता नहीं प्राप्त कर सकता। विद्यार्थी के लिए कहा गया है **"आलसस्य कुतो विद्या"** अर्थात् आलसी के लिए विद्या कहाँ? इसी प्रकार पढ़कर जब जीवन के किसी भी क्षेत्र में प्रवेश करना है वहाँ यदि आलसी बन गए तो प्रगति रुक जाएगी। इसलिए जीवन की कोई भी उम्र हो, आलसी बनकर कभी नहीं बैठना है। कहा भी गया है–

उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः।

(घ) उद्योगिकं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः।

व्याख्या– परिश्रमशील पुरुष श्रेष्ठ को ही लक्ष्मी वरण करती है अर्थात् जो व्यक्ति परिश्रमी है उसी के पास धन, यश और विद्या होती है। वही जीवन में सच्चा सुख पाता है, इसलिए सदैव उद्यमशील होना चाहिए।

प्र०5. संस्कृत में अनुवाद कीजिए।

उ० (क) आलस्य मनुष्यों का महान शत्रु है।

अनु० आलस्यं मनुष्याणां महान् रिपुः अस्ति।

(ख) परिश्रम के बिना जीवन व्यर्थ है।

अनु० परिश्रमं विना जीवनं व्यर्थम् अस्ति।

(ग) पर्वत रमणीय होते हैं।

अनु० पर्वताः रम्याः भवन्ति।

(घ) सरलता एक अच्छा गुण है।

अनु० आर्जवम् एकं श्रेष्ठं गुणम् अस्ति।

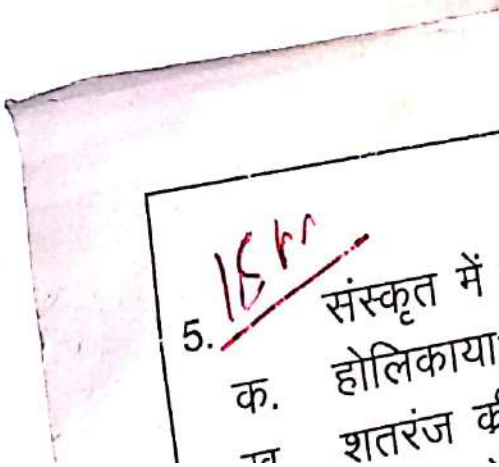

Scanned with CamScanner